दिन
१
९ जून, २००७

जीव से शिव की यात्रा

ॐ नमः शिवाय।

हे ईश्वर। सब का कल्याण हो। सबकी रक्षा करना। आज का दिन मेरी जीवन पुस्तिका में स्वर्णाक्षरों से अंकित होनेवाला है। हे शिव, हे परम पिता, मेरा बरसों पुराना स्वप्न सच होने जा रहा है। कहते हैं कि केवल पुण्यवान् लोग अपने स्वप्नों को परिपूर्ण होता देख़ पाते हैं। आज मेरे आनंद और उत्साह की कोई सीमा नहीं है, बारिश के पानी को तरसते हुए चातक की तरह मैंने इस दिन की प्रतिक्षा की है। मैं इससे अधिक क्या कहूं। मेरी नम आंखें और हृदय की तेज़ धडकन मेरी कृतज्ञता बयान कर रही है।

इस दिन की प्रतीक्षा करते हुए जो रोमांच मैंने अनुभव किया, उससे सौ गुना आनंद मेरे रोम रोम को हर्षित कर रहा है। मेरे सर्वस्व, महापिता शिव का साक्षात्कार करने जा रही हूं मैं। मुझे श्रद्धा और विश्वास है कि मैं यह दुर्गम यात्रा संपन्न कर सुख़पूर्वक वापस आऊंगी, धन्य होकर।

हर नया अनुभव हमारे लिये यादगार और ख़ुशी प्रदान करने वाला होता है, आज मेरे साथ कुछ नया होने वाला है। वह अद्भुत दृश्य, जो मेरे मानसपटल पर अश्रुपूर्ण हास्य के साथ हमेशा के लिए अंकित हो गया है। हास्य - क्योंकि कैलाश-मानसरोवर यात्रा का शुभ अवसर मुझे प्राप्त हो रहा था। अश्रु - क्योंकि अपनों से पूरा एक महीना अलग होना था।

हृदय में शिवजी का स्मरण और यात्रा पूर्ण करने की जिजीविषा। मेरे सभी परिजनोंने मुझे अहमदाबाद (एयरपोर्ट) पर प्रेम-भरी बिदाई दी।

मैं मानसरोवर यात्रा के तीसरे जत्थे में थी। पहले जत्थे की यात्रा क्षेत्र में भारी बर्फबारी के कारण रद्द हो गई थी। पहले जत्थे के यात्री दूसरे जत्थे के रूप में गये थे, जिस में 57 यात्री थे। हर जत्थे में ज्यादा से ज्यादा 60 यात्री होते हैं। पिछले कुछ दिन, यात्रा निरस्त होने की आशंका में हम सभी ने काफी चिंता में गुज़ारे थे। अंततः यात्रा बहाल हो गई और हम सब परिजनों की शुभेच्छा और भक्तिभाव के साथ चल पड़े।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्
उर्वारुकमिव बन्धनात्, मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

(इस महामृत्युंजय मंत्र को संजीवनी मंत्र भी कहा जाता है, इसके उच्चारण से पैदा हुए कंपन शरीर के चारों ओर एक सुरक्षा-कवच रचते हैं। यह मंत्र जीवन में सुख़, शांति और समृद्धि लाता है।)

दिन
२
१० जून, २००७

शुरूआत

हमारी यात्रा का द्वितीय दिन। सुबह 8.00 बजे दिल्ली के हार्ट एंड लंग्ज़ अस्पताल पहूंचना था। वहां बारी बारी से एक्स-रे, टीएमटी और फेफड़ों की क्षमता परखने वाले परीक्षण हुए। कैलाशयात्रा के लिए फेफड़े, तरल वायु सह पाने में सक्षम होने अपेक्षित हैं। प्रत्येक परीक्षण के पहले उसमें सफल होंगे या नहीं, इस असमंजस की अवस्था से सभी यात्री यत्किंचित आशंकित अवश्य रहते थे। हर परीक्षण सफल होने पर प्रसन्नता की लहर दौड़ जाती थी।

हम मानसरोवर यात्रा के लिये तैयार थे। उसके बारे में सभी ने अनोखी और चमत्कारिक बातें सुन रखी थी। कहते हैं, रात को सरोवर के किनारे बैठने से कई अजीब घटनाएं दिख़ती हैं। ऐसी दिव्य घटनाएं सब अपनी अपनी श्रद्धा की आंख़ से देख़ते हैं। किसी को तीन तारे आकाश से उतर कर जल में समाहित होते देख़ने को मिले। किसी को आकाश में गणपति की आकृति दिखी। किसी को अग्निकुंड में महादेव दिखाई दिए।

कैलाशयात्री शिवकुमार जी ने हमें बताया कि 'आप लोग रात्रि के समय मानसरोवर के किनारे अवश्य बैठना। कुछ न कुछ तो अवश्य दिखाई देगा। जीवन में ऐसे अवसर कम ही मिलते हैं। रात्रि के अंधकार में दैदीप्यमान सरोवर, रजतवर्णी कैलाश और आकाश में टिमटिमाते हज़ारों हीरक सितारे।' हम तो इन्हीं स्वप्नों को संजोए निद्रा के आगोश में समा गये।

delhi heart & lung institute

दिन
३
११ जून, २००७

तबीबी परीक्षण

आज सैन्य चिकित्सालय में परीक्षण के लिए जाना था।

यात्रा के बारे में पहले एक लघु फिल्म दिखाई गई। फिर सभी को क्रमशः परीक्षण के लिए ले जाया गया। वहां से फ़िर बत्रा चिकित्सालय।

बाद में एक सज्जन ने कुछ और हिदायतें दी और हमें तीन समूहों में बांट दिया गया।

1. हिसाब-किताब

2. सामान

3. खान-पान

हमारे जत्थे में अब तक के जत्थों से अधिक यात्री हैं। सभी मधुर और सहज। कल हमें वीज़ा और नकदी के लिये आठ बजे दूतावास जाना है।

दिन
४
१२ जून, २००७

विदेश मंत्रालय, दिल्ली

प्रात:काल विदेश मंत्रालय पहुंचे। भारतीय विदेश मंत्रालय के मुख्य द्वार के सामने संसद के दक्षिणी छोर पर बनी यह इमारत भव्य और दर्शनीय है। इमारत का शिलान्यास 12 फरवरी 1921 को ड्यूक ऑफ कोनोट द्वारा हुआ था। सामान्यत: यहां प्रवेश आसान नहीं है। हमें वहां जाना अच्छा लगा। एक महिला अधिकारी ने हमें सभी जानकारियां उपलब्ध करवाईं और यात्रा के बारे में एक फ़िल्म दिख़ाई गई।

अब हमारी यात्रा का श्रीगणेश हो रहा था। सारी यात्रा-प्रक्रियाएं पूर्ण हो चुकी थीं। अगले दिन हमें यात्रा के लिए प्रस्थान करना था । सभी के चेहरों पर एक तरह का चिन्तामय उल्लास था - सभी सही-सलामत वापस लौट आयेंगे न! यात्रा निर्विघ्न संपन्न तो होगी न!

दिन
५
१३ जून, २००७

कुमाऊं की बसंत

हर ऋतु की अपनी अपनी रंगत होती है। पतझड़ के पीछे-पीछे बसंत को भी आना ही है। इसी आशा पर जीवन टिका है।

हम आज हिमालय की ओर जाएंगे। स्वर्णिम प्रभात। नाश्ता कर सभी बाहर

आए। दरवाज़े के बाहर दो बसें ख़ड़ी थी और बहुत सारे लोग यात्रियों के स्वागत के लिए ख़ड़े थे। कई लोग यात्रियों को शुभेच्छा स्वरूप पुष्प-माला, अंग-वस्त्र, कुम-कुम, अक्षत या आवश्यक औषधियां भेंट करते हैं। स्वागत के बाद हम बस में बैठ गए। रास्ते में गाज़ियाबाद में छोटा-सा शुभेच्छा कार्यक्रम हुआ और वहां से काठगोदाम के लिए प्रस्थान। 'कुमारद्वार' में भोजन किया और वहां से बसें बदलकर हम आगे बढ़े। यहीं से वातावरण कुछ कुछ ठंडा होने लगा था। बादल आसमान में मंड़रा रहे थे।

जून-जुलाई के खुशनुमा मौसम में रास्ते के दोनों ओर रंगबिरंगे फ़ूल खिले थे। लाल ओढ़नी ओढ़े दो बालिकाओं ने यहां भी कुम-कुम तिलक और पुष्प-मालाओं से हमारा स्वागत किया ।

रात्रि के समय हम अल्मोड़ा पहुंचे। काठगोदाम से अल्मोड़ा का मार्ग मनोरम है। पर्बतों की गोद में सर्पाकर रास्ते और बादलों से घिरी घाटियों में सचेत आगे बढ़ती हुई हमारी बस। सामने पहाड़ों पर सुचारू सीढ़ीनुमा रास्ते। जैसे किसी वास्तुशिल्पी ने बनाए हों। पर्बतों की ढलानों पर हरी घास और पीली आभा में सजे खेत एक मोहक दृश्य उपस्थित कर रहे थे। हम बादलों को नीचे छोड़ते हुए ऊपर जा रहे हैं। रात के 9.30 बजे के करीब पाईन वृक्षों से सजे अल्मोड़ा पहुंचे। हमारा रात्रि पड़ाव यहीं था। यह कुमाऊं का गिरिनगर है जो राजा कल्याणचंद ने सन् 1586 में बसाया था। यह कुमाऊं का सांस्कृतिक केन्द्र भी है। 'होलीडे होम अल्मोड़ा' एक छोटी पहाड़ी पर स्थित है।

बहुत सारी सीढ़ियां चढकर हम ऊपर पहुंचे। रात का समय होने से अधिक चहल पहल नहीं थी। देर रात हमारी आवास कुटियाओं के बाहर बादलों के हल्के स्पर्श का आनंद उठाते हुए हम बैठे रहे। कितनी रोमांचक जगह है।

यदि यात्रा की शुरूआत इतनी सुहानी है तो आगे क्या क्या होगा। रात भर मुझे यही सपने आते रहे।

एक प्रणय कथाः देवदार और बोगनवेलिया

कुमाऊं का गिरिनगर अल्मोड़ा। यहां की एक घाटी में दो वृक्ष - एक देवदार और दुसरा बोगनवेलिया, कई सालों से एक-दूजे से लिपटकर ख़डे हैं। बर्फ हो या तूफान, ये कभी अलग नहीं होते। देवदार तो सौ वर्षों से भी पुराना है। पहाड़ की दूसरी ओर से आ रहा बोगनवेलिया इस घाटी का परिचायक है।

आलिंगन में ख़ड़े दो प्रेमी – वृक्ष और बेल एक-दूजे का सहारा बने साथ ख़डे हैं। इनको देख़कर, इनकी प्रेमकथा सुनकर आंखें भर आई। आजकल छोटी छोटी बातों पर लोग अलग हो जाते हैं। यह दो - वृक्ष और बेल हमें सदा साथ निभाने का संदेश दे रहे हैं।

दिन
६
१४ जून, २००७

अल्मोड़ा और धारचूला

सुबह उठते ही बाहर बैंगनी रंग के सूंदर पुष्प दिखे, जो रात के अंधेरे में हम देख़ नहीं पाये थे। यह जॅकेरेन्दा वृक्ष के फ़ूल थे। इस वृक्ष को 'प्राईड ऑफ इण्डिया' (भारत का गौरव) कहा जाता है। वैसे तो ये दक्षिण अफ्रीका और ब्राज़ील के वासी हैं, लेकिन भारत में ऊंचाईयों पर दिखाई देते हैं।

आगे की बस यात्रा में एक अनूठा अनुभव हुआ। हम रास्ते में एक रेस्तरां में नाश्ता करने रुके हुए थे। टेबल के साथ में एक विशाल 8x8 फीट की खिड़की थी। आस पास मंडराते बादल कभी कभी खिड़की से धंस आते और हम पर जलाभिषेक कर जाते। यहां से रास्ता और भी दर्शनीय होता गया। पहाड़ों से गिरते झरने रास्ते से होकर दूसरी ओर खाई में निकल जाते थे, मानो हमें हंसकर विदा करते हों। कुदरत ने यहां दिल खोलकर सुंदरता बिखेरी है। हम खाने के लिये चकोरी गांव में रुके। इसे छोटी फ़ूलों की घाटी कहा जाता है। रंग-बिरंगे फ़ूल, पाइन वृक्ष की नशीली खुशबू और हल्का-सा कोहरा... जो कि मीर्थी कैम्प पहुंचते पहुंचते काफी घना हो गया था। यह दृश्य आज भी मेरी आंखों में बसा हुआ है।

रात को धारचूला पहूंचते समय सभी यात्री प्रकृति की सुंदरता के साथ एकाकार होते हुए शान्त और सम्मोहित थे। धारचूला छोटा-सा गांव है, काली नदी के तट पर। गांव का नाम धारचो (शुभ पवित्र द्वार) और ला (रुगलो) मिलकर धारचोला हुआ, और समयांतराल में धारचूला हो गया।

यह गांव दो देशों में बसा है, एक ही नाम से। कालीगंगा इसे भारत और नेपाल में विभाजित करती है। दोनों हिस्सों में रीत-रिवाज, संस्कृति और जीवनशैली एक ही है। भारत-नेपाल वैसे ही पड़ौसी मित्र देश होने के कारण दोनों देशों के नागरिकों को आवागमन के लिये वीज़ा – पासपोर्ट की आवश्यकता नहीं होती।

नीलमहोर – जॅकेरेन्दा

हरी पत्तियां और बैंगनी रंग का संयोजन मनभावन प्रभाव उत्पन्न करता है। मैंने मानसशास्त्रों में दे जा वु (De Ja Vu) शब्द सुना था। लेकिन कभी नहीं सोचा था कि उस दिन देखे हुए यह वृक्ष मेरे जीवन-अनुभव का अंग बन जाएंगे।

इस वृक्ष को पवित्र माना गया है। इस के कई नाम हैं – नीलमहोर, नूपुर, नीलकंठ और लेविश लायलेक। इसकी खुशबू मनमोहक होती है। मैं इसकी छाया में घंटों ख़ड़ी रहती थी। अगर इसके नीचे ख़ड़े रहने पर किसी के सिर पर उसका पुष्प गिरता है तो उसे ईश्वर का आशीर्वाद माना जाता है।

संयोग देखिए, छह साल के बाद जब मैंने अपना जेवरात का व्यवसाय आरंभ किया, तब उसका नाम रखा 'जॅकेरेन्दा ज्युएल्स' यह हिमालयन वृक्ष, उसके फूल और खुशबू मेरे दिलो-दिमाग में ऐसे बैठ गए थे कि मेरी कंपनी के लिए यही नाम मुझे उपयुक्त लगा।

दिन
७
१५ जून, २००७

नेपाल

भोर के स्वर्णिम प्रकाश में नहाया हुआ नेपाल सामने दिख़ रहा था। कालीगंगा भारत और नेपाल के बीच बह रही है। आवागमन के लिये नदी पर एक पुल है। इस तरफ भारत और उस पार नेपाल। वैसे तो दोनों देशों के बीच मधुर संबंध है, पर कभी-कभार सुने जाने वाले सरहद के विवाद यहां नहीं दीखे। सुबह की ललिमा और हवा की ताज़गी आजभी मुझे याद है। मौसम भी हमें साथ दे रहा था, मानो कह रहा हो – जी लो जी भर के। मैं टकटकी लगाए इस अनुपम सौंदर्य का पान कर रही थी।

सुबह 9.00 बजे के आस पास बस में सवार होकर मांगती की ओर चल पड़े। कुछ ही समय बाद बस नियत स्थल तक पहुंच गई। यहां से हमारा पैदल रास्ता शुरू होना था। कुछ यात्री, जो चल नहीं सकते, उनके लिए घोड़े भी आ गये थे। चहल पहल, घोड़े वालों के साथ भाव-ताव और काफी कोलाहल के बीच सब यात्री अपनी सुविधा देख़ रहे थे। कुछ देर में बारिश भी शुरू हो गई।

दिन के 1.00 बजे हमने चलना शुरू किया और सायं 5.00 बजे गाला पहुंचे। इस जगह की सुंदरता देख़ कर आधी थकान दूर हो गई। सफेद बर्फ से ढकी लंबी पर्बतमाला। साथ में गहरी खाई, आनंद के साथ थोड़ा-बहुत डर भी लगता था। रास्ते के किनारे बैठक जमी और देर तक बातें चलती रही। दिलखुश समा और मनभावन परिद्दश्य। कौन छोड़ कर जाए? धीरे धीरे चांदी-से धवल दीखने वाले पर्बत ढलते सूरज की रौशनी में स्वर्णिम आभा ओढ़ते गए। कुछ भी कुरबान, ऐसी सुंदरता पर।

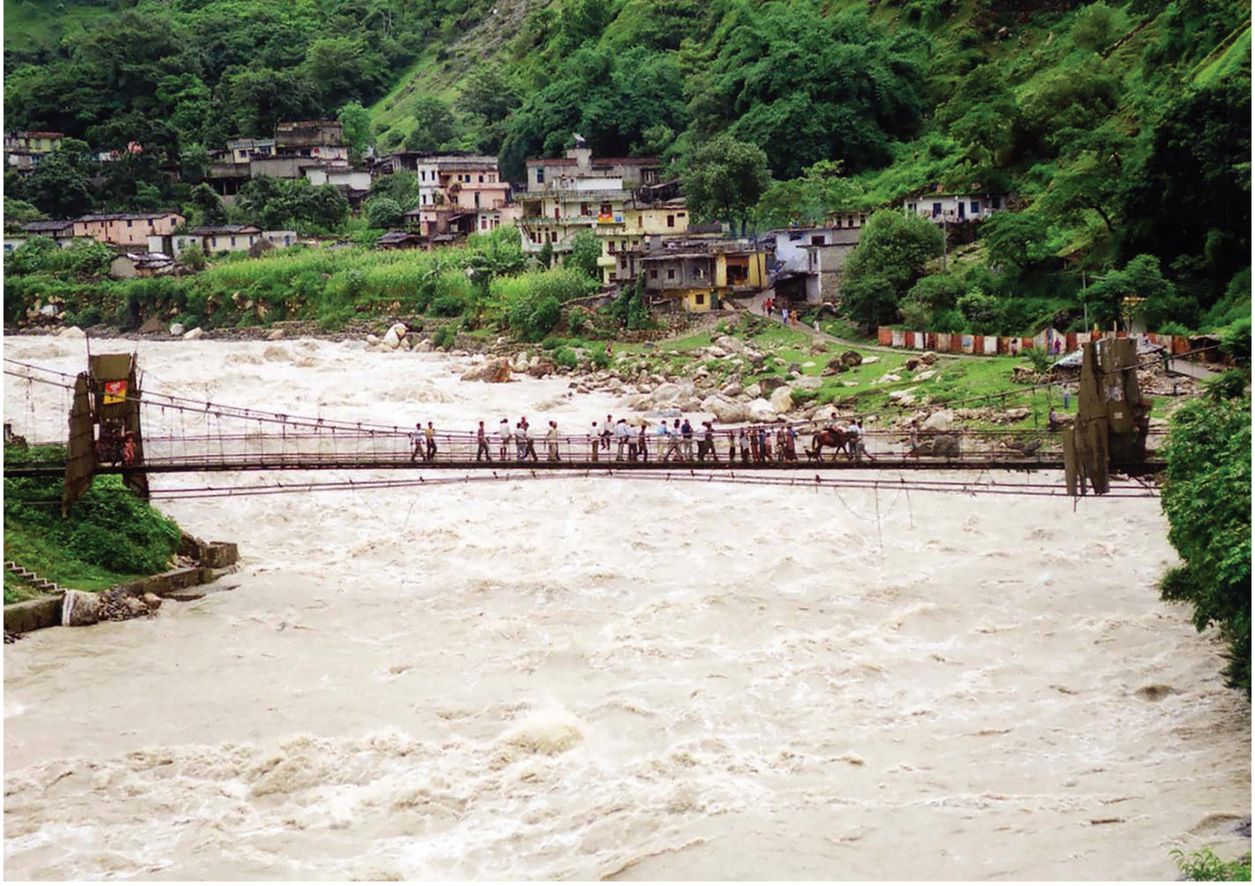

आशुतोष, शशांक, शेख़र, चंद्रमौलि, दिगम्बराः

शिव यात्रा नेपाल से शुरू होती है। यहां पशुपतिनाथ का शिवलिंग एक सादे मंदिर में स्थित है। इसकी कथा काफी रोचक है। पांडव महाभारत युद्ध में हुए विनाश से विषादग्रस्त थे। भगवान शिव को खोज रहे थे, अपनी आत्मशांति के लिए, किंतु शिवजी जानते थे कि भ्रातृहत्या और वंशनाश का पाप इतना गहरा था कि उसका उन्मूलन आसान नहीं था। भगवान पांडवों के सम्मुख़ इसी कारण आना नहीं चाहते थे। पांडवों से बचने के लिए शिवजी ने एक भैंसे का स्वरूप धारण किया और छुपते रहे, किन्तु उनका प्रकाशमय आभामंडळ कैसे छुपे? पांडवों ने शिवजी को पहचान लिया और बलशाली भीमसेन ने उनका सिर पकड़ लिया।

भीम ने ज़िद की कि जब तक आप प्रकट होकर हमें पाप-मुक्ति का संदेश नहीं देंगे, मैं आपको छोड़ूंगा नहीं। अंततः शिव प्रकट हुए, पांड़वों को पाप-मुक्ति का उपाय बताया और प्रस्थान कर गए। जहां पर भीम ने उनका मस्तक पकड़ रखा था, वहां पर प्रकट, स्वयंभू शिवलिंग को पशुपतिनाथ के नाम से जाना जाता है। कहा जाता है कि शिव का मस्तक पशुपतिनाथ में और शेष शरीर फैलते हुए केदारनाथ तक गया। भौगोलिक दृष्टि से देखा जाय तो गंगा का उद्भव-स्थल गंगोत्री शिव मस्तक से भी ऊपर स्थित है।

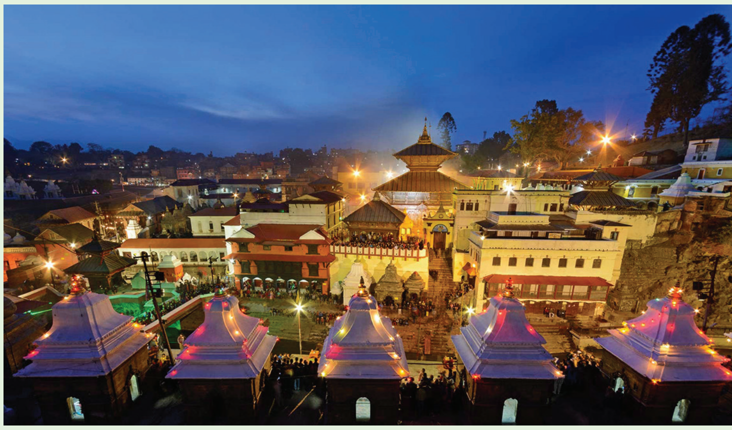

दिन
८
१६ जून, २००७

जहां चाह वहां राह

उत्त्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र के पर्बत से सटी सीढ़ी के आसपास बसा ये छोटा सा गांव गाला। ज्यादा कुछ नहीं है यहां।

हम 57 यात्री और केवल 6 स्नानगृह। क्या होता होगा। यहां नहाना तो दूर की बात है। ऐसी जगहों पर गर्म पानी, साफ सुथरे स्नानगृह, वहां पर कम भीड़ और पर्याप्त समय मिले तो बात कुछ और.. वर्ना हरि हरि।

आज का रास्ता कठिन है। एक तो भारी बारिश और 4400 सीढ़ियां उतरनी है। सीढ़ियों पर काई जमी है और फ़िसलने का ड़र रहता है। सभी यात्री एक दूसरे के सहारे चल रहे थे। भगवान कैसे भी यह रास्ता पार करा दें। खैर... जो होना होता है, होकर रहता है। मेरा पांव सीढ़ी के पत्थर पर फ़िसला और दो पत्थरों के बीच फ़ंस गया। झटके से दर्द हुआ और पांव को सुन्न करता हुआ फ़ैल गया। मेरा पूरा ध्यान उस दर्द पर केन्द्रित हो गया। दर्द से मुझे चक्कर आने लगे और एक डग आगे चलना मुश्किल लगने लगा। नसीब देखिए, आस-पास कहीं दो-चार क्षण बैठकर आराम करने की जगह भी नहीं। साहस कर के रास्ते से बाजू होकर मैंने बैग से दर्द-निवारक गोली निकाली। उमेश की दी हुई नी-कैप पहन ली और शिवजी का नाम लेते हुए चलना आरंभ किया। वहां घोड़े भी नहीं थे। मुझे चलना ही था। अपने आप को ढांढ़स बंधाते हुए चलने लगी तो रास्ता भी धीरे धीरे तय होता गया।

चलते चलते मैं सोच रही थी, जीवन भी तो ऐसा है। आप रुके तो रुक जाएगा। आप चलते रहो तो ये बढ़ेगा। मुझे कवि इन्दीवर का गाना याद आया। 'तू न चलेगा, तो चल देंगी राहें, मंज़िल को तरसेंगी तेरी निगाहें, तुझको चलना होगा...'

बीच में था लख़नपाल, जहां कुछ समय विश्राम कर के फिर से आगे कदम। हम पहुंचे गांव माल्पा। दर्द के बावजूद रास्ते की सुंदरता ने मन को प्रसन्न कर दिया। साथ में दोनों किनारों तक फैली उफनती कालीगंगा, पानी का कर्णप्रिय धोष... रास्ता कब कट गया, पता ही न चला। पानी का नाद कुदरत का जो साक्षात्कार कराये, क्या कहना। पांव का दर्द तो जैसे छू-मंतर हो गया।

यह रास्ता दीर्घ और दुर्गम होने के कारण हमें कुछ हिदायतें दी गई थीं, जिनका अनुपालन करना ही होता है -

1. आपनी तर्ज़ पर अकेले चलो।
2. फ़ोटोग्राफी के लिए न रुकें, आप गिर सकते हैं।
3. सामने की ओर से आ रहे घोड़ों को रास्ता दें। पर्बत की ओर खिसक जाएं।
4. रेलिंग पर वज़न न डालें, न ही उसके सहारे ख़ड़े रहे। कभी कभार कोई ज़ंग खाई हुई रेलिंग टूट सकती है।

5. धीरे से चलें, क्योंकि रास्ते फिसलन भरे हो सकते हैं।

6. जल-प्रपात से गुज़रते समय रेनकोट ज़रूर पहनकर रखें।

इन सूचनाओं का पालन करते, हम माल्पा पहुंच गए। इस गांव के साथ एक दुर्घटना जुड़ी हुई है। 17 अगस्त, 1998 के दिन हुए भूस्खलन में करीब 300 यात्रियों की जान चली गई थीं, जिसमें जानी-मानी ओड़ीसी नृत्यांगना प्रतिमा बेदी भी थीं। हम दबे हुए घरों के अवशेष देख़ पा रहे थे। दुःख़द और ड़रावना माहौल था।

यहां भगवान शिव की नीले रंग की विशाल प्रतिमा है, पास में शिवलिंग और एक बड़ा-सा घंटा। मुश्किल से चार-पांच घर, जिनमें मंदिर के पुजारियों का निवास था। बाहर तो बारिश थी, लेकिन हमें तो आगे चलना था। थोड़ी दूरी पर एक जल-प्रपात तेज़ी से गिर रहा था। हम उससे बचते-बचाते आगे बढ़े।

कभी चलते, कभी भागते, क्योंकि ऊपर से पानी के साथ छोटे-मोटे कंकड़-पत्थर भी गिर रहे थे। शिवजी को मिलने जाना है तो थोड़ी-बहुत कठिनाईयां तो होनी ही थी। क्या पता, आगे क्या होता है। सायं 6.00 बजे हम बुधी पहुंचे।

डमरू नाद

यहां शिवजी के डमरू की बात करनी है। हमारे पौराणिक धर्मग्रंथों के अनुसार डमरू के नाद में चमत्कारिक मंत्र घोषित होते हैं। डमरू का नाद कोई समस्या हो, उसे हल करता है। कहते हैं, यह सांप और बिच्छू के ज़हर का निवारक भी है।

ड़मरू नाद शरीर में गूंजता रहता है और वैब दुनिया के संशोधन अनुसार अ से ॐके कंपन दिलो-दिमाग को शांत रख़ते हैं। तनाव दूर कर के नकारात्मक शक्तियों को हटाते है।

दिन
९
१७ जून, २००७

फूलों की घाटी - छियालेख

आज बुधी से गुंजी जाना है। पहले तीन किलोमीटर का रास्ता अति कठिन चढ़ाई का है। उसके बाद रास्ता समतल है। सुहावना रास्ता था। पर्बतों के बीच तैरते बादल, हल्की-सी फ़ुहार और हरियाली। कभी कभी किसी पक्षी का चहचहाना। सभी यात्री खुशमिज़ाज़ थे। कल की कठिन यात्रा के बाद आज के दिन की यात्रा सहज-सुन्दर थी। पहली बार यात्रा में दूर-सुदूर तक फ़ैले हरे मैदान और ऊपर गगन विशाल।

हरी हरी वसुंधरा पे
नीला नीला ये गगन।...

तीन किलोमीटर चलने के बाद हम पहुंचे छियालेख, फ़ूलों की घाटी। मौसम से पूर्व ही छोटे छोटे रंग-बिरंगे फ़ूल खिले थे। लगता था ईश्वर कहीं आसपास ही है। पीछे की ओर छोटा-सा सुन्दर मंदिर। हम तो ऊंचाई पर थे और नीचे घाटी की ओर से कोहरा हमारी दिशा में बढ़ रहा था। हम भी तैयार थे उसमें खो जाने के लिए।

किंवदंती है कि भगवान राम और सीताजी ने 13 वर्ष के वनवास का कुछ समय यहां बिताया था। लक्ष्मणरेखा भी मौज़ूद है। बात तो श्रद्धा की है, सत्यासत्य में गए बिना हमने वह स्थान भी देखा। छोटे छोटे वृक्ष समूह के बीच रेखा जैसी आकृति विद्यमान है।

आगे एक टनल दिखाई गई। एक भारतीय इन्जीनियर यहां काम करते समय चीन का तरफदार बन गया और सब से छुप कर टनल का काम करता रहा। आखिरकार, वह पकड़ा भी गया। अंततः उसे फांसी दी गई।

हमारा रास्ता हरे मैदानों से गुज़रता हुआ सर्पाकार ट्रैक था। हम रंग-बिरंगे फ़ूलों के बीच चल रहे थे। 'दूर तक निगाह में है गुल खिले हुए' करीब पांच किलोमीटर के बाद हमारे पोर्टर सतीश का गांव आया – गर्भयांग।

दोपहर तीन साढ़े तीन बजे पहुंचे गुंजी। पहाड़ों की ढलान पर बसा गुंजी अन्य गांवों से थोड़ा अलग है। 800 की बस्ती। अब जगह का प्रभाव कहें या मेरी दृष्टि, यहां अजीब शान्ति मिली हृदय और मन को। लोग भी कला-प्रिय लगे। लकड़ी के घर, आगे नक्काशी, एक-दूसरे से सटे हुए छोटे छोटे घर। गांव की संकरी गलियां शान्त दिखीं, यहां के लोगों जैसी। ऐसे सहज और भले लोगों से मिलते-मिलाते हम अपने पड़ाव पर पहुंचे।

कितनी प्यारी जगह है। मैं आई.टी.बी.पी. (I.T.B.P.) कैम्प मैं एक छोटे से टीले के शीर्ष पर बैठी यह वर्णन लिख़ रही हूं। सामने क्षितिज तक छोटे छोटे झोंपड़े, कालीगंगा और दूर पर्बतमालाएं। यहां रास्ते के उस पार नेपाल और कालीगंगा के इस ओर भारत। दूर से कोई आवाज़ आती हुई सुनाई दी। बाद में पता चला, घोड़ों के गले में बंधी हुई घंटियों की खोख़ली-सी ध्वनि थी। सुनती रही बैठे बैठे।

यहां के देवदार वृक्ष के जादू भरे फ़ल इस प्रदेश की पहचान हैं। इसकी ख़ुशबू। तीखी, नशीली। यह फल मुझे ख़ूब भाते हैं। मैं उन्हें उठाकर अपनी बैग में ड़ालती रहती हूं। सुगंध सदैव पास रख़ने के लिये। नीचे घाटी में बादल घिरते आ रहे हैं। ऐसा अद्भुत नज़ारा देख़ने पर भी जी नहीं भरता। बस बैठकर देख़ते रहे क़ुदरत के करिश्मे को।

खैर... कैम्प में जवानों की हलचल नज़र आ रही है। मुझे भी यहां से उठने का संकेत मिल रहा है। अगर बैठी रही तो बादल मुझे भी साथ में उड़ा ले जायेंगे। मज़ा तो आएगा पर अभी कैलाश पहुंचना बाकी है। अलविदा... नीचे उतर आई।

पैंग्वीन और पाईनकोन

ईसाई धर्म में पाईन के वृक्ष को खास महत्ता दी गई है। वैटिकन इसके सूखे फ़ूल-पाईनकोन को प्रजनन क्षमता के साथ जोड़ता है। यह फल मानव शरीर में पीनियल ग्रंथी की तरह दिख़ता है। पीनियल ग्रंथी मानव मस्तिष्क में मेलेटोनिन नामक रसायन पैदा करती है। जब दो आंखों के बीच यह रसायन झरना शुरू होता है, तब हमें नींद आती है। मेलेटोनिन अंधेरे में बेहतर काम करती है।

इसी कारण सोते समय अंधेरा करने की सूचना दी जाती है।

इसका सूख़ा फ़ूल भी मादक-सी सुगंध फ़ैलाता है। तीखी ख़ुशबू कमरे, अलमारी या बैग में महकती रहती है। परफ्युमरी और ड्राई फ्लावर गुलदस्ते में इसका प्रयोग प्रचलित है।

बचपन में मैंने पेंग्वीन और पाईनकोन की कहानी पढ़ी थी, तब से मुझे पाईनकोन के प्रति अजीब आकर्षण रहता है। मैं इसे जहां भी मिल जाय, इकट्ठे करती रहती हूं। पाईनकोन शुभेच्छा के तौर पर भी लिये और दिये जाते हैं। घर में पाईनकोन रख़ने से सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है, ऐसा फैंगशुई का दावा है।

दिन
१०
१८ जून, २००७

सुनहरी याद

मेरे कल रात के सपने के बारे में बात करनी है मुझे। वरना चैन नहीं आएगा मुझे। बहुत सारे सपने आते रहते हैं। लेकिन कल का सपना मेरे जीवन की सुनहरी याद है। यह सपना मैं बार बार देख़ना चाहूंगी। कल रात सपने में आए छियालेख, वहां खिले ताज़े रंगीन फ़ूल और वह लक्ष्मणरेखा। आज भी मेरे मानस-पटल पर यह दृश्य अंकित है, जो मैंने छियालेख में देखा। हमारे अर्धजागृत मस्तिष्क पर जो दृश्य प्रभाव डालता है, वह हमारे सपने में भी आ सकता है। वह छोटा-सा टीला, जहां बैठ कर मैं लिख़ रही थी, वह भी साद्दश्य हुआ। क्या चमत्कार है। यहां प्रकृति में चुंबकीय आकर्षण है। हर सच्चे प्रकृति-प्रेमी को यहां आना चाहिए।

सुबह के छह बज रहे थे। मैं पूरी तरह स्वप्न से बाहर आ चुकी थी। वहां रक्तचाप, दिल की धड़कन जैसे मेडिकल परीक्षण किये गये। यात्रा में कोई तकलीफ हुई? कोई शारीरिक परेशानी? अगर हो तो दवाई दी जाती है। कोई सख्ती नहीं, न किसी को लताड़। हमारे 57 यात्रियों के जत्थे में 30-40 यात्री 50 वर्ष के ऊपर थे। सभी ठीक-ठाक थे। किसी किसी ने अपने छोटे-मोटे स्वास्थ्य मामलों में दवाई लिख़वा ली। ऐसे ही दिन पुरा हुआ।

मध्य-बिन्दु गुंजी

पहाड़ों से घिरा गुंजी ॐ पर्वत और आदि कैलाश का मध्य-बिन्दु है।

शिवजी के पांच पवित्र पर्वत हैं।

1. कैलाश 2. आदि कैलाश (शिव कैलाश, पिथौरागढ़) 3. किन्नौर कैलाश (किन्नौर, हिमाचल) 4. श्री कट महादेव कैलाश (कुल्लु, हिमाचल) 5. मनी महेश कैलाश (चंबा कैलाश, जो मणि-महेश तालाब के पास है)